अरावली पुनर्जनन योजना

चर्चा में क्यों?

हाल ही में दिल्ली वन विभाग ने अरावली के दुर्लभ देशी पेड़ों के संरक्षण के लिये [असोला-भट्टी वन्यजीव अभयारण्य](#) में एक **ऊतक संस्कृति प्रयोगशाला** की स्थापना की पहल की है।

मुख्य बिंदु:

- **ऊतक संवर्धन प्रयोगशाला:** प्रयोगशाला एक इन-विट्रो पूर्ण विकसित पौधे-से-पौधे के ऊतकों को निकालने में सक्षम होगी, जिससे एक ही वृक्ष से कई वृक्ष तैयार किये जा सकेंगे।
- वन विभाग [भारतीय वानिकी अनुसंधान और शिक्षा परिषद (ICFRE)](#) एवं **वन अनुसंधान संस्थान (FRI)** के वनस्पति विज्ञानियों व वैज्ञानिकों से सहायता लेगा।
- प्रयोगशाला का प्राथमिक लक्ष्य नियंत्रित वातावरण में लुप्तप्राय देशी वृक्षों को उगाना और **आक्रामक प्रजातियों** के कारण पुनर्जनन चुनौतियों का सामना करने वाली प्रजातियों के पौधों को पुनर्जीवित करना है।
- टिशू कल्चर कृषि में अत्यधिक प्रभावी साबित हुआ है, विशेष रूप से **केले, सेब, अनार और जेट्रोफा जैसी फसलों** के साथ, जो पारंपरिक खेती के तरीकों की तुलना में अधिक उपज प्रदान करता है।
- **अरावली योजना:**
- कुल्लू (घोस्ट ट्री), पलाश, दूधी और धौ जैसी रिज प्रजातियों का पुनर्जनन आक्रामक प्रजातियों द्वारा बाधित होता है, जिसके परिणामस्वरूप जीवित रहने की दर कम होती है, बड़े पैमाने पर गुणन केवल ऊतक संस्कृति, विशेष रूप से **शूट संस्कृति के माध्यम** से प्राप्त किया जा सकता है।
- प्रयोगशाला लुप्तप्राय **औषधीय पौधों** के संवर्धन में भी उपयोगी होगी।

असोला वन्यजीव अभयारण्य

- असोला-भट्टी वन्यजीव अभयारण्य एक महत्त्वपूर्ण वन्यजीव गलियारे के अंत में स्थित है जो अलवर में **सरिस्का राष्ट्रीय उद्यान** से शुरू होता है और हरियाणा के मेवात, फरीदाबाद तथा गुरुग्राम ज़िलों से होकर गुज़रता है।
- इस क्षेत्र में उल्लेखनीय दैनिक तापमान भिन्नता के साथ **अर्धशुष्क जलवायु** है।
- वन्यजीव अभयारण्य में वनस्पति मुख्य रूप से एक **खुली छतदार काँटेदार झाड़ियाँ** हैं। यह देशी पौधे जेरोफाइटिक अनुकूलन जैसे काँटेदार उपांग और मोम-लेपित, रसीले तथा टोमेंटोज पत्ते प्रदर्शित करते हैं।
- प्रमुख वन्यजीव प्रजातियों में मोर, कॉमन वुडश्राइक, सिरिकीर मल्कोहा, नीलगाय, गोल्डन जैकल्स, स्पॉटेड हिरण आदि शामिल हैं।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/aravalli-regeneration-plan